न वोके गुप्तचरोंके
में अपने गुप्तचरोंके
से मालूम था; किन्तु
वचन दिया था कि
रतमें अपने दावोंपर
य क्यों
पर हमें बिल्कुल
क वह बड़े पैमानेपर
मारी सेनाएं समुद्री
र ट्रेनिंगकी अभ्यस्त
कालम दो पर)

२५ हजार वर्गमीलसे अधिक क्षेत्र विवादग्रस्त प्रतीत होता है।

बाह्य मंगोलिया, जो चीन और साइबेरियाके मध्यमें स्थित है, सोवियत कम्युनिस्ट गुटसे संबंध रखता है। उसने चीनके विरुद्ध रूसी नीतिका समर्थन किया है।

नयी दिल्ली, २४ दिसम्बर (प्रेट्र)। जापानी राजदूत डा. कोता मोत्सुदैरा आज वित्तमंत्री श्री मोरारजी देसाईसे मिले।

...सेनाने राष्ट्रसंघका ...कोप्टर मार गिराया

एलिजबेथविले, २४ दिसम्बर (रा)। ...र राष्ट्रसंघकी इथोपियाई सेनामें आज जमकर गोलाबारी

...न कटंगी सेनाने ...प्टर मार ...क्रिसमस ...को मुक्त ...हेलि- ...घायल और तीन ...यलोंको

यमनमें १३६ मिस्री सैनिक मारे गये

काहिरा, २४ दिसम्बर (एप्रे)। काहिरा रेडियोसे ब्राडकास्ट करते हुए राष्ट्रपति नासरने बताया कि यमनमें अब तक मिस्री सेनाओंके कुल

विश्व भारती विश्व विद्यालयमें दीक्षान्त समारोहके अवसरपर भाषण करते हुए प्रधानमन्त्रीने चीन-भवनका उल्लेख किया और कहा—यह भवन अन्तरराष्ट्रीय सहयोगका प्रतीक है।

दो चीनी विद्वानोंके संयोजकत्वमें आयोजित यह समारोह इस बातका प्रमाण है कि हमारा चीनी जनता एवं संस्कृतिसे कोई विवाद नहीं है। चीनी जनताके प्रति हमारे मनमें कोई दुराव नहीं है।

चीनकी सरकारने अनेक बुरी बातें की और हमारे देशपर हमला किया। हम उसका अवश्यमेव प्रतिरोध करेंगे और कर रहे हैं। लेकिन चीनी जनताके प्रति हमारे मनमें कोई दुराव नहीं है।

विशिष्ट सिद्धान्त

उन्होंने कहा—ब्रिटिश साम्राज्यवादके विरुद्ध अपने संघर्षमें हमने कुछ विशिष्ट सिद्धान्तोंको सर्वोपरि रखा। हमारा ब्रिटिश जनताके साथ कोई झगड़ा नहीं था। इसके विपरीत हमने अंग्रेजी और उसके साहित्यका अध्ययन किया।

हम आक्रान्ताका डटकर सामना करें। लेकिन उस लड़ाईमें बुनियादी सिद्धान्तोंको छोड़ना गलत काम होगा।

श्रीमती बण्डारनायकके साथ सुबन्द्रियो भी पेकिंग जायेंगे

कोलम्बो, २४ दिसम्बर (प्रेट्र)

समाचारपत्रोंकी रिपोर्टोंके अनुसार श्रीलंकाकी प्रधानमंत्री श्रीमती बंडारनायक जब पेकिंग जायंगी, तब उनके साथ इन्दोनेशियाके परराष्ट्रमंत्री डा. सुबान्द्रियो भी रहेंगे।

कोलम्बो सम्मेलनमें काहिरा प्रतिनिधिमंडलके नेता श्री अली साबरी श्रीमती बंडारनायककी श्री नेहरूके साथ वार्ताके दौरान मौजूद रहेंगे।

नगर का मौसम

मंगलवारको मौसम साफ रहेगा। न्यूनतम तापमान सम्भवतः ५ और ७ डि. से. के बीच होगा।

सोमवारको अधिकतम तापमान २२.२ डि. से. (७२.० डि. फ.) सामान्य और न्यूनतम तापमान ५.७ डि. से. (४२.२ डि. फ.) सामान्य से १ डि. से. कम रहा। मंगलवारको सूर्यास्त ५-३० पर और बुधवारको सूर्योदय ७.१२ पर होगा।

चीनियोंके पीछे हटनेके समाचारकी पुष्टि नहीं की।

नभाटाके अनुसार उपसीके कामेंग डिवीजनमें चीनी आक्रमणके समय घिरे जवानोंमें से कुछ अभी भी लौट रहे हैं।

क्रिसमसपर दुर्घटनाओंमें ३६७ अमरीकी मरे

शिकागो, २४ दिसम्बर (रा)। पता चला है कि क्रिसमस त्योहारके पिछले ५५ घंटोंमें ३६७ अमरीकी मरे जिसमें से २९० व्यक्ति सड़क दुर्घटनाओंमें मरे।

गया है जिसमें दवाओंके हरेक निर्माता, आयातक अथवा वितरकको थोक और खुदरा मूल्यकी सूची टांगना अनिवार्य है।

स्थायी आयातक

स्थायी आयातकों द्वारा आयात करनेके लिए पचाससे कुछ अधिक वस्तुओंकी जो सूची घोषित की गयी है, उसमेंसे अधिकांश वस्तुओंमें लगभग वही पचास प्रतिशतकी कटौती कायम रखी गयी है, जो पिछली छमाहीमें थी। पर कुछ इनीगिनी वस्तुओंके कोटेमें वृद्धि की गयी है तो चंद वस्तुओंका कोटा घटाया भी गया है।

कायम रहेगी।

पुराने आयातकोंको टेनिस बाल, बच्चोंके दूध, माल्ट एक्सट्रेक्ट, सुपारी, एक्सपोज्ड फिल्मों, नकली दांत तथा अनेक मशीनोंके पुर्जोंके आयातके लिए कोटा नहीं दिया जायगा। किन्तु वास्तविक उपभोक्ताओंको उनमेंसे कुछ चीजें (जैसे बालर और रोलर बियरिंग) मगानेकी इजाजत दी जा सकती है।

सरकारी विज्ञप्तिमें कहा गया कि विलासकी चीजें बनानेमें काम आने

(शेष अंतिम पृष्ठ कालम एकपर)

रावलपिंडी वार्ता रा. अय्यूब की दृष्टि में महत्वपूर्ण

ढाका, २४ दिसम्बर (प्रेट्र)। पाकिस्तानके राष्ट्रपति अय्यूबने आज एक पत्रकार सम्मेलनमें कहा क २७ दिसम्बरसे रावलपिण्डीमें शुरू होने वाली भारत-पाकिस्तान मंत्रिस्तरीय वार्ताको खूब मौका दिया जाना चाहिए क्योंकि इस उपमहाद्वीपकी भावी सुरक्षा मुख्यतया दोनों देशोंके अच्छे सम्बन्धोंपर ही निर्भर करती है।

जनता अपनी जरूरतों में कटौती करे

मद्रास, २४ दिसम्बर (नभाटा)। उपराष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैनने आज कहा कि भारतने शांतिकी नीतिको विश्वासकी भावनासे अपनाया है किसी कारण विशेषसे नहीं।

यहांसे पास ही गांधी ग्राममें ग्रामीण उच्च शिक्षा संस्थानके दीक्षांतसमारोहमें उपराष्ट्रपतिने अपने भाषणमें कहा कि इस प्रकारके संस्थान समाजवादी ढंग के समाज तथा सहकारी कल्याण राज्य

किन्तु शायद
प्रश्न : यदि
बाद वापस
उन्हें मंत्रिमंड
किया गया
उत्तर : ए
को बाहर फ
हैं। याद र
प्रधान सेनाप
कर दिया।
श्री नेहरू
भारत द्वारा
तीन करोड़
स्वीकार किये
विमानोंके आ
बन्दीसे दूर
परिवर्तन न
स्पष्ट किया
हैं। तटस्थ
घटनाओंके प्र
किन्तु भार
प्रति बड़े ज
इसलिए हम
श्री नेहरू
सैन्य सहायत
स्वीकार किय
तेजीके साथ
तेजीके साथ
जरूर पड़ा, अ

श्रीगणेशाय नमः ॥ समृद्धं सौभाग्यं सकलवसुधायाः किमपि तन्महैश्वर्यं लीलाजनितजगतः खंडपरशोः ॥ श्रुतीनां सर्वस्वं सुकृतमथ मूर्तं सुमनसां सुधासौंदर्यं ते सलिलमशिवं नः शमयतु ॥ १ ॥ दरिद्राणां दैन्यं दुरितमथ दुर्वासनहृदां द्रुतं दूरीकुर्वन् सकृदपि गतो दृष्टिसरणिम् ॥ अपि द्रागाविद्याद्रुमद

लनदीक्षागुरुरिह प्रवाहस्ते वारां श्रिय
मयमपारां दिशतु नः ॥२॥ उदंचन्मा-
तंडस्फुटकपटहेरंब जननी-कटाक्षव्या
क्षेपक्षणजनितसंक्षोभनिवहाः॥ भवंतु
त्वंगंतोहरशिरसिगंगातनुभुवं-स्तरंगाः
प्रोत्तुंगा दुरितभयभंगाय भवताम्॥३॥
तवाऽलंबादंब स्फुरदलघुगर्वेण सहसा
मया सर्वेऽवज्ञासरणिमथ नीताः सुर-

गं. १ ल. १

गणाः॥ इदानीमौदास्यं भजसि यदि
भागीरथि तदा निराधारो हा रोदिमि
कथय केषामिह पुरः॥४॥ स्मृतिं या-
ता पुंसामकृतसुकृतानामपि च या हर-
त्यंतस्तंद्रां तिमिरमिव चंडांशुसरणिः॥
इयंसातेमूर्तिःसकलसुरसंसेव्यसलिला
ममांतः संतापं त्रिविधमपि पापं च हर
ताम्॥५॥ अपि प्राज्यं राज्यं तृणमिव

गं.
२

परित्यज्य सहसा विलोलद्वानीरं तव जननि तीरं श्रितवताम् ॥ सुधातः स्वादीयःसलिलभरमातृप्तिपिबतां जनाना मानंदःपरिहसाते निर्वाणपदवीम् ॥६॥ प्रभाते स्नातीनांनृपतिरमणीनां कुचतटी-गतोयावन्मातर्मिलति तवतोयैर्मृगमदः॥मृगास्तावद्वैमानिकशतसहस्रैः परिवृता विशंति स्वच्छंदं विमलवपुषोनं

ल.
२

दनवनम् ॥७॥स्मृतं सद्यःस्वांतं विरच-
यतिशांतं सकृदपिप्रगीतं यत्पापं झटि-
तिभवतापं च हरति॥इदं तद्दंगेति श्रव-
णरमणीयं खलु पदं मम प्राणप्रांतर्व-
दनकमलांतर्विलसतु ॥८॥ यदंतःखेलं
तो बहुलतरसंतोषभरिता न काका ना-
काधीश्वरनगरमाकांक्षमनसः॥ निवा-
सात्लोकानां जनिमरणशोकापहरणं

ग.
३

तदेतत्ते तीरं श्रमशमनधीरं भवतु नः ॥९॥ न यत्साक्षाद्वेदैरपि गलितभेदैरव- सितं न यस्मिन् जीवानां प्रसरति म- नोवागवसरः ॥ निराकारं नित्यंनिज महिमनिर्वासिततमो विशुद्धंयत्तत्त्वं सुरतटिनितत्त्वंनविषयः॥ १० ॥ महा- दानैर्ध्यानैर्बहुविधवितानैरपि च यन्न लभ्यं घोराभिः सुविमलतपोराशिभि-

ल.
३

रपि ॥ अचिंत्यं तद्विष्णोःपदमखिल साधारणतया ददाना केनासि त्वमिह तुलनीया कथय नः॥ ११ ॥ नृणामी-क्षामात्रादपि परिहरंत्या भवभयं शि-वायास्ते मूर्तेःक इह महिमानं निग-दतु॥ अमर्षम्लानायाः परममनुरोधं-गिरिभुवो विहाय श्रीकंठः शिरसि नि-यतं धारयति याम्॥ १२॥ विनिंद्यान्यु-

न्मत्तैरपिच परिहार्यां यापतितैर्वाच्या-
न्निर्वात्यैः सपुलकमपास्यानि पिशुनैः
हरंती लोकानामनवरतमेनांसि कि-
यतां कदाप्यश्रांता त्वं जगति पुनरेका
विजयसे॥१३॥स्खलंती स्वर्लोकादव-
नितलशोकापहृतये जटाजूटग्रंथौ य-
दसि विनिबद्धा पुरभिदा॥ अये निर्लो-
भानामपिमनसि लोभं जनयतां गु-

णानामेवायं तव जननि दोषः परि-
णतः ॥ १४ ॥ जडानन्धान्पंगून्प्रकृति-
बधिरानुक्तिविकलान् ॥ ग्रहग्रस्तानस्ता
खिलदुरितनिस्तारसरणीन् ॥ निलिंपै-
र्निर्मुक्तानपिच निरयांतर्निपततो न-
रानंब त्रातुं त्वमिह परमं भेषजमसि ॥
॥ १५ ॥ स्वभावस्वच्छानां सहजशि-
शिराणामयमपामपारस्ते मातर्जयति

महिमा कोऽपि जगति ॥ मुदा यं गायं-
तिद्युतलमनवद्यद्युतिभृतः समासाद्या-
द्यापि स्फुटपुलकसांद्राः सगरजाः ॥
॥ १६ ॥ कृतक्षुद्रैनस्कानथ झटिति संत-
प्तमनसः समुद्धर्तुं संति त्रिभुवनतले ती
र्थनिवहाः ॥ अपिप्रायश्चित्तप्रसरणप
थातीतचरितान्नरान् दूरीकर्तुं त्वमिव
जननि त्वं विजयसे ॥ १७ ॥ निधानं

धर्माणां किमपि च विधानं नवमुदांम-
धानंतीर्थानाममलपरिधानंत्रिजगतः॥
समाधानंबुद्धेरथखलु तिरोधानमाधियां
श्रियामाधानं नःपरिहरतु तापंतव वपुः
॥१८॥पुरो धावंधावं द्रविणमदिराघू-
र्णितदृशांमहीपानां नानातरुणतरखेद
स्यनियतम्॥ ममैवायं मन्तुःस्वहितश
तहंतुर्जडधियो वियोगस्ते मातर्यदिह

करुणातःक्षणमपि॥१९॥मरुल्लीलालो
लल्लहरिलुलितांभोजपटलीस्खलत्पांसु
व्रातच्छुरणविसरत्कौंकुमरुचि॥सुरस्त्री
वक्षोजक्षरदगरुजंबालजटिलं जलं ते
जंबालं मम जननजालं जरयतु॥२०॥
समुत्पत्तिःपद्मारमणपदपद्मामलनखा
न्निवासः कंदर्पप्रतिभटजटाजूटभवने॥
अथायं व्यासंगो हतपतितनिस्तारणा-

विधौ न कस्मादुत्कर्षस्तव जननिजा-
गर्तु जगतः॥ २१ ॥न गम्यायांतीनां क-
थय तटिनीनां कतमया पुराणां संहर्तुः
सुरधुनि कपर्दोऽधिरुरुहे ॥ कया च श्री
भर्तुः पदकमलमक्षालि सलिलैस्तुला-
लेशो यस्यां तव जननि दीयेत कवि-
भिः ॥ २२ ॥ विधत्तां निःशंकं निरव-
धिसमाधिं विधिरहो सुख शेषशेतां ह-

रिरावरतं नृत्यतु हरः॥ कृतं प्रायश्चित्तै-
रलमथ तपोदानयजनैः सवित्री कामा-
ना यदि जगति जागर्ति भवती॥ २३ ॥
अनाथः स्नेहार्द्रां विगलितगतिः पुण्य-
गतिदां पतन् विश्वोद्धर्त्रीं गदविगलितः
सिद्धभिषजम्॥ सुधासिंधुं तृष्णाकुलि-
तहृदयो मातरमयं शिशुः संप्राप्तस्त्वा
महमिह विदध्याःसमुचितम् ॥२४॥

विलीनो वै वैवस्वतनगरकोलाहलभरो
गता दूता दूरं क्वचिदपिपरेतान्मृगयि-
तुम्॥विमानानां भ्रातो विदलयति वी-
थीर्दिविषदां कथा ते कल्याणी यदवधि
महीमंडलमगात् ॥ २५ ॥ स्फुरत्का-
मक्रोधप्रबलतरसञ्जातजटिलज्वरज्वा
लाजालज्वलितवपुषां नः प्रतिदनम्॥
हरंतां सन्तापं कमपि मरुदुल्लासलहरीछ

टाश्चंचत्पाथःकणासरणायो दिव्यसरित
।२६।इदं हि ब्रह्मांडं सकल भुवना भो-
गभवनं तरंगैर्यस्यांतर्लुठति परितस्ति
दुकमिव ।।स एषः श्रीकंठप्रावितजट -
जूटजटिलो जलानां संघातस्तव जन-
नि तापं हरतु नः।।२७।।त्रपंते तीर्थानि
त्वरितमिह यस्योद्धृतिविधौकरं कर्णौकु
र्वंत्यपि किल कपालिप्रभृतयः।।इमं तं

मामंब त्वमियमनुकंपार्द्रहृदयेपुनाना
सर्वेषामघमथनदर्पं दलयसि ॥२८॥
श्वपाकानांव्रातैरमितविचिकित्साविचलितैर्विमुक्तानामेकं किल सदनमेनः
परिषदाम्॥अहोमामुद्धर्तुं जननिघटयंत्या:परिकरंतवश्लाघांकर्तुंकथमिवसमर्थो नरपशुः।२९।न कोऽप्येतावंतं खलु
समयमारभ्यमिलितो यदुद्धारादाराद्

वति जगतो विस्मयभरः॥ इतीमामीहां ते मनसि चिरकालं स्थितवतीमयं संप्राप्तोऽहं सफलयितुमंबप्रणायन: ।३०। श्ववृत्तिव्यासंगो नियतमथ मिथ्याप्रलपनं कुतर्केष्वभ्यासः सततपरपैशून्यमननम्॥ अपि श्रावंश्रावं मम तु पुनरेवं गुणगणान् ऋते त्वत्को नाम क्षणमपि निरीक्षेत वदनम्॥ ३१ ॥ विशाला-

भ्या माभ्यां किमिह नयनाभ्यां खलु
फलं न याभ्यामालीढा परमरमणीया
तव तनुः ॥ अयं हि न्यक्कारो जननि म-
नुजस्य श्रवणयोर्ययोर्मातर्यातस्तव
लहरिलीलाकलकलः ॥३२॥ विमर्शः
स्वच्छन्दं सुरपुरमयंते सुकृतिनः पतंति
द्राक्पापा जनानि नरकांतः परवशाः ॥
॥ विभागोऽयं तस्मिन्नशुभमयमूर्तौ ज

ग.

१०

नपदं न यत्र त्वं लीलादलितमनुजा
शेषकलुषा ॥ ३३ ॥ अपि घ्नंतो विप्रा-
नविरतमुशंतो गुरुसतीः पिबंतो मैरेयं
पुनरपि हरतश्च कनकम्॥ विहाय त्व-
य्यंते तनुमतनुदानाध्वरजुषामुपर्यंब
क्रीडंत्यखिलसुरसंभावितपदाः॥ ३४॥
अलभ्यं सौरभ्यं हरति सततं यः सुमन-
सां क्षणादेव प्राणानपि विरहशस्त्रक्षत

ल.

१०

भृताम् ॥ त्वदीयानां लीलाचलिततल-
हरीणां व्यतिकरात् पुनीते सोऽपि द्रा-
गहह पवमानस्त्रिभुवनम् ॥ ३५ ॥ कियं
तः संत्येके नियतमिह लोकार्थघटकाः
परे पूतात्मानःकति च परलोकप्रणयि
नः॥सुखं शेते मातस्तव खलु कृपातः पु
नरयंजगन्नाथःशश्वत्त्वयि निहितलो
कद्वयभरः ॥ ३६ ॥ भवत्या हि व्रात्या

ग.
११

ऽधमपतितया खंडपरिषत्पारित्राण-
स्नेहः श्लथयितु मशक्यः खलुयथा ॥
ममाप्येवं प्रेमा दुरितनिवहेष्वंब जगति
स्वभावोऽयं सर्वैरपि खलु यतो दुष्परि-
हरः ॥ ३७॥ प्रदोषांतर्नृत्यत्पुरमथन-
लीलोद्धृतजटातटाभोगप्रेंखल्लहरि-
भुजसंतानविधुतिः ॥ बिलक्रोडक्रीड-
ज्जलडमरुटंकारसुभगस्तिरोधत्तां ता-

ल.

पं त्रिदशतटिनीतांडवविधिः ॥ ३८ ॥
सदैव त्वय्येवार्पितकुशलाचिंताभरमि
मं यदि त्वं मामंब त्यजसि समयेऽस्मि
न्सुविषमे ॥ तदा विश्वासोऽयं त्रिभुव
नतलादस्तमयते निराधारा चेयं भव-
ति खलु निर्व्याजकरुणा ॥ ३९ ॥ कप-
र्दीदुल्लस्य प्रणायामि लदर्धांगयुवतेः पु-
रारेः प्रेंखंत्यो मृदुलतरसीमंतसरणौ ॥

भवान्या सापत्न्यस्फरितनयनं कोम-
लरुचा करेणा क्षिप्तास्ते जननि विज-
यंतां लहरयः ॥ ४० ॥ प्रपद्यंते लोकाः
कति न भवतीमत्रभवतीमुपाधिस्त-
त्रायं स्फुरति यदभीष्टं वितरसि ॥ शपे
तुभ्यं मातर्मम तु पुनरात्मा सुरधुनि
स्वभावादेव त्वय्यमितमनुरागं विधृ-
तवान् ॥ ४१ ॥ ललाटेया लोकैरि-

ह खलु सलीलं तिलकिता तमो
हंतुं धत्ते तरुण तरमार्तंडतुलनाम् ॥
विलुंपंती सद्यो विधिलिखितदुर्वर्ण-
सरणिं त्वदीया सा मृत्स्ना मम ह-
रतु कृत्स्नामपि शुचम् ॥४२॥ नरान्मू-
ढास्तत्तज्जनपदसमासक्तमनसोहंसतः
सोल्लासं विकचकुसुमव्रातमिषतः ॥
पुनानाः सौरभ्यैः सततमलिनो नित्य-

मलिनान् सखायो नः संतु त्रिदशत-
टिनीतीरतत्वः ॥४३॥ यजंत्येके देवा-
न्कठिनतरसेवांस्तदपरे वितानव्यास-
क्ता यमनियमरक्ताः कतिपये ॥ अहं तु
त्वन्नामस्मरणभृतिकामस्त्रिपथगज-
गज्जालं जाने जननि तृणजालेन स-
दृशम् ॥४४॥ अविश्रांतं जन्मावधिसुकृ-
तजन्मार्जनकृतां सतां श्रेयः कर्तुं कति-

तजन्मा जनकृता सता श्रेयः कृत कांत-
न कृतिनः संति विबुधाः॥ निरस्तालंबा-
नामकृतसुकृतानां तु भवतीं विनाऽमु-
ष्मिँल्लोके न परमवलोके हितकरम् ॥
॥ ४५ ॥ पयः पीत्वा मातस्तव सपदि
यातः सदचैर्विमूढः संरंतु क्वचिदपि न
विश्रांतिमगमम् ॥ इदानीमुत्संगेमृदुप-
वनसंचाराशिशिरे चिरादुन्निद्रं मां स-
दयहृदये शायय चिरम् ॥४६॥ बधान-

द्रागेव द्रढिमरणीयं परिकरंकिरीटे बा-
लेंदुं नियमयपुनःपन्नगगणैः॥नकुर्या
स्त्वं हेलामितरजनसाधारणतया ज-
गन्नाथस्यायं सुरधुनि समुद्धारसमयः
॥४७॥ शरच्चंद्रश्वेतां शशिशकलश्वे-
तालमुकुटांकरैःकुंभांभोजे वरभवनि-
रासौ च दधतीम्॥ सुधाधाराकारा भर-

श्रितां त्वां ये ध्या-
यंत्युदयाति न तेषां परिभवः ॥ ४८ ॥
दरस्मितसमुल्लसद्वदनकांतिपूरामृतैर्भ
वज्वलनभर्जितानानिशमूर्जयंती न-
रान् ॥ चिदेकमयचंद्रिकाचयचमत्कृ-
तिं तन्वती तनोतु मम शंतनोः सपदि
शंतनोरंगना ॥ ४९ ॥ मंत्रैर्मीलितमौ-
षधैर्मुकुलितं त्रस्त सुराणां गणैः स्रस्तं
सांद्रसुधारसैर्विदलितं गारुत्मतैर्ग्रावभिः

गं.
१५

वीचीक्षालितकालियाहित पदे स्व-
र्लोककल्लोलिनि त्वं तापं निरयाधुना-
ममभवज्वालावलीढात्मनः ॥ ५० ॥ द्यू-
तेनागेंद्रकृत्तिप्रमथगणमणिश्रेणिनं-
दींदुमुख्यं सर्वस्वंहारयित्वा स्वमथ पु-
रभिदि द्राक्पणीकर्तुकामे ॥ साकूतं हैम-
वत्या मृदुलहसितया वीक्षितायास्त-
वांऽबंव्याललोलोल्लासिवल्गल्लहरिनट-

ल.

श्रीगणेशाय नमः

अथरामस्तवराजःप्रारंभ ।

ॐ अस्य श्रीरामचन्द्र स्तवराजस्तोत्र मंत्रस्य सनत्कुमार ऋषिः ॥ अनुष्टुप् छंदः ॥ श्रीरामो देवता सीता बीजत् ॥ हनुमान् शक्तिः ॥ श्रीराम प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥ सूतउवाच ॥

सर्वं शास्त्रार्थतत्वज्ञं व्यासं सत्यवती

सुतम् ॥ धर्मपुत्रः प्रहृष्टात्मा प्रत्युवाच मुनीश्वरम् ॥१॥

युधिष्ठिर उवाच ।

भगवान्योगिनांश्रेष्ठसर्वशास्त्रविशारद किं तत्वं कि परं जाप्य किं ध्यानं मुक्ति साधनम् ॥ २॥ श्रोतुमिच्छामि तत्सर्वं ब्रूहि मे मुनिसत्तम ॥

वेदव्यास उवाच ।

धर्मराज महाभाग शृणु वक्ष्यामि

धर्मराज महाभाग शृणु वक्ष्यामि

तत्त्वतः॥३॥ यत्परं यद्गुणातीतं यज्ज्यो-

तिरमलं शिवम्। तदेव परमं तत्त्वं कैवल्य

पदकारणम् ॥४॥ श्रीरामेति परं जाप्यं तार-

कं ब्रह्मसंज्ञकम्। ब्रह्महत्यादिपापघ्नमिति

वेदविदो विदुः ॥५॥ श्रीराम रामेति जना

ये जपन्ति च सर्वदा। तेषां भुक्तिश्च मुक्ति-

श्च भविष्यति न संशयः॥६॥ स्तवराजं

पुरा प्रोक्तं नारदेन च धीमता। तत् सर्वं सम्प-

वक्ष्यामि हरिध्यानपुरःसरम् ॥७॥ तापत्र
याग्निशमनं सर्वाघौघनिकृन्तनम् ॥ दारि-
द्र्यदुःखशमनंसर्वसंपत्करांशिवम् ॥ ८ ॥
विज्ञानफलदंदिव्यंमोक्षैकफलसाधनम् ॥
नमस्कृत्यप्रवक्ष्यामिरामकृष्णांजग मयम्
॥ ९ ॥ अयोध्या नगर रम्ये रत्नमण्डप-
मध्यगे ॥ स्मरेत्कल्पतरोर्मूले रत्नासिंहा-
सनंशाभम ॥ १० ॥ तन्मध्येऽष्टदलंपद्मं

सनंशभम ॥ १० ॥ तन्मध्येऽष्टदलं पद्मं
नानारत्नैश्चवेष्टितम् ॥ स्मरन्मध्ये दाशर
थिं सहस्रादित्यतेजसम् ॥ ११ ॥ पितुरंकगतं
राममिंद्रनीलमणिप्रभम् ॥ कोमलांगं वि-
शालाक्षं विद्युद्वर्ण वरावृतं ॥ १२ ॥ भानुको
टिप्रतीकाशं किरीटेन विराजितम् ॥ रत्नग्रैवे
यकेयूरं रत्नकुंडलमंडितम् ॥ १३ ॥ रत्नकं-
कणमंजीरकटिसूत्रैरलंकृतम् ॥ श्रीवत्सको
तुभोरस्कं मुक्ताहारोपशोभितम् ॥ १४ ॥

दिव्यरत्नसमायुक्तंमुद्रिकाभिरलंकृतम् ॥ राघवंद्विभुजंवालंराममीषात्स्मिताननम् ॥१५॥तुलसीकुन्दमन्दार पुष्पमाल्यैरलंकृतम्॥कर्पूरागुरुकस्तूरी दिव्य गन्धानुलेपनम्॥१६॥योगशास्त्रेष्वभिरतंयोगीशं योगदायकम्॥सदाभरतसौमित्रि शत्रुघ्नैरूपशोभितम्॥१७॥ विद्याधरसुराधीश सिद्धगन्धर्वकिन्नराः ॥योगीन्द्रैर्नारदाद्यैश्च

स्तूयमानमहर्निशम् ॥१८॥ विश्वामित्र
वशिष्ठादिमुनिभिः परिसेवितम् ।सनकादि
मुनिश्रेष्ठयोगिवृन्दैश्चसेवितम् ।१९।रामं
रघुवरंवीरंधनुर्वेदविशारदम् ॥मंगलायतनं
देवरामं राजीवलोचनम् ॥ २० ॥ सर्वशा
स्त्रार्थतत्वज्ञमानन्दकरसुन्दरम् ॥ कौशि
ल्यानन्दनंरामं धनुर्बाणधरंहरिम् ॥२१॥
एवं संचिन्तयन्विष्णुं यज्ज्योतिरमलं

विभुम् ॥ प्रहृष्टमानसो भूत्वा मुनिवर्यः सनारदः ॥ २२ ॥ सर्वलोक हितार्थाय: तुष्टाव रघुनन्दम् ॥ कृतांजलिपुटो भूत्वा चिन्तयेन्नदभुतहरिम् ॥२३ यदेकंयत्प रंनित्यं यदनंतचिदात्मकम्॥यदेकंव्याप कंलोके तद्रूपं चिंतायाम्यहम् ॥२४॥ विज्ञान हेतुं विमलायताक्षंप्रज्ञानरूपंस्व सुखैकहेतुम् ॥ श्रीरामचंद्रं हरिमादिदेवं

परात्परं राममहं भजामि ॥ २५ ॥ कविं
पुराणं पुरुषैः पुरस्तात्सनातनं योगिनमी
शितारम्॥ अणोरणीयांसमनंतवीर्यंप्राणे
श्वरं राममसौ ददर्श ॥२६॥

नारद उवाच ।

नारायणंजगन्नाथमभिरामंजगत्पतिम्
कविं पुराणं योगीशं रामं दशरथात्मजम्
॥२७॥ रामराजं रघुवरं कौशल्यानंद

वर्धनम् ॥ भर्गं वरेण्यं विश्वेशं रघुनाथं जगद्गुरुम्। २८॥ सत्यं सत्यं प्रियं श्रेष्ठं जानकीवल्लभं विभुम् ॥ सौमित्रिपूर्वजं शांतं कामदं कमलेक्षणम् ॥२९॥ आदित्यं रविमीशानं घृणिंसूर्यमनामयम्॥ आनंदरूपिणं सौम्यं राघवं करुणामयम्॥३०
यामदग्न्यं तपोमूर्तिं रामं परशुधारिणम्॥
वाक्पतिं वरदं वाच्यं श्रीपतिं पक्षिवाह-

न्म॥३१॥श्रीशार्ङ्गधारिणंरामं चिन्मया-
नंदविग्रहम्॥ हलधृग्विष्णुमीशानंबल-
रामं कृपानिधिम् ॥ ३२॥ श्रीवल्लभ
कृपानाथं जगन्मोहनमच्युतम्॥ मत्स्य
कूर्म बराहादि रूपधारिणमव्ययम्॥३३।
वासुदेवं जगद्योनिमनादिनिधनं हरिम्॥
गोविन्दं गोपतिं विष्णुं गोपीमनोहर-
म्॥३४॥ गो गोपालपरिवारं गोपकन्या

समावृत्तम्॥ विद्युत्पुंजप्रतीकाशं रामं कृष्णं जगन्मयम् ॥३५ गोगोपिका समाकीर्णं वेणुवादन तत्परम् ॥ कामरूपं कलावंतं कामिनी कामदं विभुम् ॥ ३६ ॥ मन्मथं मथुरानाथं माधवं मकरध्वजम् ॥ श्रीधरं श्रीकरं श्रीशं श्रीनिवासंपरात्परम्॥३७॥ भूतेशं भूपतिं भद्रंविभूतिं भूतिभूषणम्॥ सर्वदुःखहरंवीरंदुष्टदानववैरिणम्॥३८॥

श्रीनृसिंहंमहाबाहुंमहान्तंदीप्ततेजसम्॥
चिदानंदमयंनित्यंप्रणवंज्योतिरूपिणा-
म्।३९। आदित्यमण्डलगतंनिश्चितार्थ
स्वरूपिणाम्॥भक्तप्रियं पद्मनेत्रं भक्ता
नामीप्सित प्रदम् ॥४०॥ कौशलेयंकला
मूर्तिकाकुत्स्थं कमलाप्रियम् ॥ सिंहासने
समासीनं नित्यंव्रतमकल्मषम्।४१।वि-
श्वामित्राप्रियंदान्तंस्वदारनियतव्रतम्॥य

ज्ञेशं यज्ञपुरुषं यज्ञपालनतत्परम् ॥४२॥
सत्यसन्धं जितक्रोधं शरणागतवत्सलम्
सर्वक्लेशापहरणं विभीषणवरप्रदम् ।४३
दशग्रीवहरं रौद्रं केशवं केशिमर्दनम् ॥
वालिप्रमथनं वीरं सुग्रीवेप्सितराज्यदम्
॥४४॥ नरवानरदेवैश्च सेवितं हनुम-
त्प्रियम् ॥ शुद्धं शूक्ष्मपरं शान्तं तारकं
ब्रह्मरूपिणम् ॥४५॥ सर्वं भूतात्मभूतस्थं

[partial line cut off at top]

सर्वाधारं सनातनम् ॥ सर्वकारणकर्तारं
निदानंप्रकृतेः परम् ॥४६॥ निरामयं निरा
भासं निरवद्यं निरंजनम् ॥ नित्यानन्दं
निराकारमद्वैतं तमसः परम् ॥४७॥ परा
त्परतरं तत्वं सत्यानन्दं चिदात्मकम्
मनसाशिरसा नित्यंप्रणमामिरघूत्तमम्
॥४८॥सूर्यमण्डलमध्यस्थंरामंसीतासम
न्वितम्॥नमामि पुण्डरीकाक्षमेयं गुरु

तत्परमं ॥४९॥ नमोस्तुवासुदेवायज्योति
षां पतये नमः॥ नमोस्तु रामदेवायजग
दानन्दरूपिणे॥५०॥नमोवेदान्तनिष्ठा
य योगिनेब्रह्मवादिने॥मायामयंनिरस्ता
यंप्रपन्नजनसेवितं ॥ बन्दामहेमहेशानं
चण्डकोदण्डखण्डनम्॥जानकीहृदया
नन्दवदनंरघुनंदनम्॥५२॥उत्फुल्लामल
कोमलोत्पलदलश्यामायरामायतेकामाय

कोमलोत्पलदलश्यामायरामायतेकामाय

प्रमदामनोहरगुणग्रामायरामात्मने॥यो-
गारूढमुनीन्द्रमानससरोहंसायसंसार वि-
ध्वंसायस्फुरदोजसेरघुकुलोत्तंसायपुंसेन-
मः॥५३॥भवोद्भवंवेदविदांबरिष्ठमादि-
त्यचन्द्रानलसुप्रभावम्।सर्वात्मकंसर्वजग
त्स्वरूपंनमामिरामंतमसःपरस्तात्॥५४॥
निरञ्जनंनिष्प्रतिमंनिरीहंनिराश्रयो नि-
ष्कलषम प्रपंचम्॥नित्यंध्रुवंनिर्विषयंस्वरू

पंनिरन्तरं राममहंभजामि५५भवाब्धि-
पोतं भरताग्रजंतं भक्तप्रियं भानुकुलप्र-
दीपम्॥भूतत्रिनाथंभवनाधिपत्यं भजा-
मिरामंभवरोग वैद्यम्॥५६॥ सर्वाधिपत्यं
समरेगभीरंसत्यंचिदानन्दमयस्वरूपम्॥
सत्यंशिवंशान्तमयं शरण्यं सनातनंराम
महंभजामि५७कार्यक्रियाकारणमप्रमेयं
कविंपुराणंकमलायताक्षम्॥ कुमारवेद्यंक

ष्यामयंतंकल्पद्रुमं राममहंभजामि५८
त्रैलोक्यनाथं सरसीरुहाक्षंदयानिधिं द्वंद्व
विनाश हेतुम् ॥ महाबलं वेदनिधिंसुरेशं
सनातनं राममहं भजामि॥५९॥ वेदान्त
वेद्यं कविमीशितारमनादिमध्यान्तमाचिं
त्यमाद्यम् ॥ अगोचरं निर्मलमेकरूपं
नमामिरामंतमसःपरस्तात्॥६०॥ अशेष
वेदात्मकमादिसंज्ञमजं हरिंविष्णु मनंत

माद्यम्॥अपारसंवित्सुखमेकरूपं परात्परं रामसहं भजामि॥६१॥तत्त्वंस्वरूपंपुरुषं पुराणं स्वतेजसापूरितविश्वमेकम् ॥राजाधिराजं रविमण्डलस्थंविश्वेश्वरंराममहं भजामि॥६२॥लोकाभिरामं रघुवंशनाथं हरिंचिदानन्दमयं मुकुन्दम्॥ अशेषविद्याधिपतिं कवीन्द्रंनमामिरामं तमसःपर स्तात॥६३॥योगींद्र संघैश्च ससेव्यमानं

स्तात्॥६३॥योगींद्र संघैश्च सुसेव्यमानं
नारायणं निर्मलमादिदेवम्॥ नतोऽस्मि
नित्यंजगदेकनाथमादित्यवर्णं तमसःपर
स्तात्॥६४॥विभूतिदं विश्वसृजं विराज
राजेन्द्रमीशंरघुवंशनाथम्॥अचिंत्यमव्य
क्तमनन्तमूर्तिं ज्योतिर्मयं राममहं भजा
मि॥६५॥ अशेष संसार विकार हीनमा
दित्यगं पूर्णसुखाभिरामम्॥ समस्तसाक्षिं
तमसः परस्तान्नारायणं विष्णुमहं भजा

मि ॥ ६६ ॥ मुनीन्द्रगुह्यं परिपूर्णं कामं
कलानिधिं कल्मष नाशहेतुं ॥ परात्परं
यत्परमं पवित्रं नमामि रामं महतो महा
न्तम् ॥ ६७ ॥ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च देवेन्द्रो
देवतास्तथा ॥ आदित्यादि ग्रहाश्चैव त्व-
मेव रघुनन्दन ॥ ६८ ॥ तपसा ऋषयः
सिद्धाः साध्याश्च मरुतस्तथा ॥ विप्रा वेदा
स्तथा यज्ञाः पुराणां धर्म संहिताः ॥ ६९ ॥

वर्णाश्रमास्तथा धर्मा वर्णधर्मास्तथैव च॥
यक्ष राक्षस गन्धर्वा दिक्पाला दिग्गजा-
दिभिः।७०।सनकादिकमुनिश्रेष्ठास्त्वमेव
रघुपुंगव ॥ वसवोष्टौ त्रयः काला रुद्रा
एकादश स्मृताः॥७१॥ तारका दशादिक्
चैव त्वमेव रघुनन्दन ॥ सप्तद्वीपाः समु
द्राश्च नागा नद्यस्तथाद्रुमाः॥७२॥ स्था
वरा जँगमाश्चैव त्वमेव रघुनायक॥ देव

तिर्यङ् मनुष्याणांदानवानां तथैवच ॥
॥७३॥ माता पिता तथा भ्राता त्वमेव
रघुवल्लभ॥सर्वेषां त्वंपरं ब्रह्मत्वन्मयंसर्व
मेवहि॥७४॥ त्वमक्षरं परं ज्योतिस्त्वमेव
पुरुषोत्तम॥ त्वमेव तारकं ब्रह्मत्वत्तोऽन्य
न्नैव किंचन॥७५॥ शान्तं सर्वगतं सूक्ष्मं
परंब्रह्म सनातनम् ॥ राजीवलोचनंरामं
प्रणमामि जगत्पतिम् ॥७६॥

व्यास उवाच ।

ततः प्रसन्नः श्रीरामः प्रोवाच मुनिपुंगवम् ॥
तुष्टोऽस्मि मुनिशार्दूल वृणीष्व वरमुत्तमम् ।

नारद उवाच ।

यदि तुष्टोऽसि सर्वज्ञ श्रीराम करुणानिधे ॥
त्वन्मूर्तिदर्शने नैव कृतार्थोऽहं च सर्वदा ७८
धन्योऽहं कृतकृत्योऽहं पुण्योऽहं पुरुषोत्तम ॥
अद्य मे सफलं जन्म जीवितं सफलं च मे ७९
अद्य मे सफलं ज्ञानं अद्य मे सफलं तपः ॥ अद्य

मेसफलंजन्मत्वत्पादांभोजदर्शनात् २०

अद्यमे सफलंसर्वं त्वन्नामस्मरणात्तथा ॥

त्वत्पादांभोरुहद्वंदं सद्भक्तिंदेहिराघव २१

ततःपरम संप्रीतःस रामः प्राह नारदम् ॥

श्रीराम उवाच ॥

मुनिवर्य्यं महाभागमुने त्विष्टंददामिते॥

यत्त्वयाचेप्सितं सर्वंमनसातद्भाविष्यति॥

नारद उवाच ।

वरं न याचेरघुनाथ युष्मत्पादाब्ज भक्तिः

सततं ममास्तु । इदं प्रियं नाथ वरं प्रयाचे
पुनःपुनस्त्वामिदमेव याचे ॥ ८३ ॥

व्यास उवाच

इत्येवमीडितो रामः प्रादात्तस्मै वरोत्तमम्॥
वीरो राम महातेजाः सच्चिदानन्दविग्रहः
॥८४॥ अद्वैतममलं ज्ञानं त्वन्नामस्मरणं
तथा॥ अन्तर्दधे जगन्नाथः पुरतस्तस्य
राघवः॥८५॥ इति श्रीरघुनाथस्य स्तवराज

मनुत्तमम्॥सर्वसौभाग्य संपत्तिदायकं मु-
क्तिदं शुभम् ॥८६॥ कथितं ब्रह्मपुत्रेण वे-
दानां सारमुत्तमम् ॥ गुह्याद्गुह्यतमं दिव्यं
तवस्नेहात्मकीर्तितम्॥८७॥ यः पठेच्छृणु
याद्वापित्रिसंध्यं श्रद्धयान्वितः॥ब्रह्महत्या
दिपापानितत्समानिबहूनिच ।८८।स्वर्ण
स्तेय सुरापानगुरुतल्पयुतानिच।गोवधा-
द्युपपापानिअनृतात्संभवानिच।८९।सर्वैः

प्रमुच्यते पापैःकल्पायुत शतोद्भवैः॥ मान
संवाचिकं पापंकर्मणासमुपार्जितम्।९०।
श्रीरामस्मरणेनैवतत्क्षणान्नश्यति ध्रुवम्
इदंसत्यमिदंसत्यंसत्यमेतदिहोच्यते।९१
रामंसत्यंपरंब्रह्म रामात्किंचिन्न विद्यते ॥
तस्माद्रामस्यरूपंसत्यंसत्यमिदंजगत् ॥

श्रीसूत उवाच।

श्रीरामचन्द्र रघुपुंगवराजवर्यराजेन्द्रराम

रघुनायकराघवेशं॥राजाधिराज रघुनन्द
न रामचन्द्र दासोऽहँमद्य भवतः शरणा
गतोस्मि॥९३॥ वैदेही सहितं सुरद्रुमतले
हैमे महामंडपेमध्ये पुष्पकशुभासने मणि
मये वीरासने संस्थितम् ॥ अग्रेवाचयति
प्रभंजन सुतेतत्त्वं मुनीन्द्रैःपरं व्याख्यातं
भारतादिभिःपरिवृतंरामंभजे श्यामलम्
॥९४॥रामंरत्न किरीटकुण्डलयुतं केयूर

हारान्वितम् सीतालंकृतवामभागममलं
सिंहासनस्थं विभुम्॥सुग्रीवादि हरीश्वरैः
सुरगणैःसंसेव्यमानंसदा विश्वामित्रपरा
शरादिमुनिभिःसंस्तूयमानं प्रभुन्॥९५॥
सकलगुणनिधानंयोगिभिःस्तुयमानं भु
जविजितसमानं राक्षसेन्द्रादि मानम् ॥
महित नृपभानं सीतयाशोभमानं स्मर
हृदय विमानं ब्रह्म रामाभिधानम्॥९६॥

रघुवरतवमूर्तिर्मामकेमानसाब्जेनरकगति
हरन्तेनामधेयंमुखेमे अनिशमतुलभक्त्या
मस्तकंत्वत्पदाब्जंभवजलनिधिमग्नंरक्ष
मामार्त्तबँधो॥१७॥रामरत्नमहंवन्दोचित्र
कूटपतिंहरिम्॥कौशल्याभक्तिसंभूतंजान
कीकण्ठभूषणम्॥१८॥इति श्रीसनत्कुमार
संहितायांनारदोक्त श्रीरामचन्द्र स्तवराज
स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

लाला श्यामलाल हीरालालके श्यामकाशी प्रेस मथुरामें छपकर प्रकाशित हुआ।

मीर समस्याके समाधानमें कोई
रा है, तो उसके विरुद्ध अन्तिम
दम उठाये जा सकते हैं।

जनमतसंग्रह जनता की इच्छा ज्ञात
नेका सरल तरीका है, और सुरक्षा
रपदने भी उसे माना है। यदि श्री
रूके पास और कोई अच्छा प्रस्ताव
हम उसपर विचारके लिए तैयार
।

जनमतसंग्रहके लिए आवश्यक
चित परिस्थितियां तैयार होने तक
ट्रसंघीय नियंत्रण स्थापित करनेके
झावके बारेमें श्री अय्यूबने कहा कि
ट्रसंघीय नियन्त्रणके बारेमें अभी
छ नहीं कहा जा सकता। पहले तो
वलपिण्डी वार्ताका परिणाम देखें
या होता है। नियंत्रण न तो भारत
हो सकता है, न पाकिस्तानका,
ल्क वह तीसरी शक्ति या संस्थाका
हो सकता है। उसके लिए कोई
भावशाली फार्मूला होना चाहिए।

श्री अय्यूबने भारत और पाकिस्तान
संघ बनानेके श्री नेहरूके कथित
स्तावका विरोध किया।

वार्ता २६ दिसम्बरको प्रारम्भ न
होकर २७ दिसम्बरको प्रारम्भ
होगी।

वार्तामें भाग लेनेके लिए भारतीय
उच्चायुक्त श्री पार्थसारथी आज
कराचीसे यहां पहुंच गये।

श्री गालब्रेथ परराष्ट्रसचिव श्री देसाईसे मिले

नयी दिल्ली, २४ दिसम्बर (नभाटा)। अमरीकी राजदूत श्री गालब्रेथ
आज वाशिंगटनसे यहां लौटनेपर पर-राष्ट्र सचिव श्री एम. जे. देसाईसे
मिले।

पता चला है कि इस भेंटमें कश्मीर पर हालके अमरीकी सूचना विभागकी
एक विज्ञप्तिपर चर्चा हुई।

श्री गालब्रेथने यह भी स्पष्ट किया कि यद्यपि अमरीका भारत और
पाकिस्तानमें समझौता चाहता है लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि वह भारत
को शस्त्र सहायताके प्रश्नको कश्मीर समस्यासे जोड़ना चाहता है।

संयुक्त अरब गणराज्यके राजदूत भी आज श्री देसाईसे मिले।

से अधिक कटौती करनी चाहिए जिससे कि औद्योगिक साधनोंको रक्षा-कार्यों
में उपयोग किया जा सके। आवश्यक वस्तुओंकी कीमतें बढ़ने नहीं देनी
चाहिएं और रक्षाकोषमें उदारताके साथ अधिकसे अधिक धन देना चाहिए।

प.राष्ट्रोंसे भारतको शस्त्र सहायताकेलिए वार्ता जारी

लन्दन, २४ दिसम्बर (रा)। ब्रिटिश राष्ट्रमंडलीय कार्यालयके अनुसार
पश्चिमी राष्ट्रोंकी ओरसे भारतको कितनी शस्त्र सहायता दी जायगी अभी
तय नहीं हुआ है।

स्थानीय एक दैनिक पत्रकी उस रिपोर्टकी ओर जिसमें कहा गया है
कि ब्रिटेन और अमरीकाने साढ़े चार करोड़ स्टर्लिंगकी शस्त्र सहायता भारत
को देनेका निर्णय किया है, ध्यान आकर्षित किये जानेपर प्रवक्ताने कहा
कि अभी इस सिलसिलेमें कोई अंतिम निर्णय नहीं किया गया।

प्रवक्ताने कहा कि इस सिलसिले में ब्रिटेन और भारतमें अभी बातचीत
चल रही है।

चीनके
नेहरूने उ

बाबूजी

"दोस्त,

...बताया कि
...रा नहीं ।
...के भारतीय ...
...रोना हेलिकाप्टरकी
...द कटंगी सेनाके
...कटंगियोंने जोरसे
...चाहे हमें भर जानो
...हम बातचीत करने

...यर नरोनाने कहा
...है तो क्रिसमसके
...ोड़कर किसी और

...स्वीडिश मॅकेनिकों
...मरम्मत करने और
...की इजाजत दे दी ।
...में अब शांति है ।

...वादी विधायक ...पनाका स्वागत

... दिसम्बर (प्रेट्र) ।
...की कार्यकारिणीने
...समाजवादी विधायक
...का स्वागत किया ।
... कुछ सदस्योंने कहा
...ी कदम नहीं उठाया
...जससे प्रसोपा और
...यक दलमें एकता
...बाधा पैदा हो ।
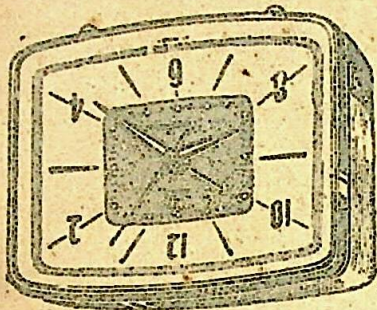
राज्योंकी योजनाओंपर विचार

नयी दिल्ली, २४ दिसम्बर (प्रेट्र) । योजना आयोगकी बैठकमें आज कार्यक्रम सलाहकार श्री बी. आर. पटेलके साथ महाराष्ट्र, गुजरात, मध्यप्रदेश तथा उत्तरप्रदेशकी योजनाओंपर विचार-विमर्श हुआ ।

श्री पटेल हालमें इन राज्योंकी सरकारोंसे उनकी १९६३-६४ की योजनाओंपर बातचीत कर चुके हैं ।

राष्ट्रीय विकास परिषदके निर्देशों के अनुसार राज्योंकी योजनाओंमें संशोधन किया जा रहा है । निर्देशोंके अनुसार कृषि, उद्योग, बिजली तथा परिवहन योजनाओंको प्राथमिकता दी जायगी ।

उ. प्र. में मनोरंजन करमें वृद्धि

लखनऊ, २५ दिसम्बर (नभाटा) । उत्तरप्रदेश सरकारने देशमें संकट-कालीन स्थितिको ध्यानमें रखकर सिनेमा प्रदर्शनों तथा अन्य प्रकारके मनोरंजन कार्यक्रमोंपर मनोरंजन करकी दर ५० से बढ़ाकर ६० प्रतिशत करने का फैसला किया है । करमें वृद्धि आगामी एक जनवरीसे लागू होगी ।